ब्रह्माजी द्वारा रहस्योद्घाटन क्यों करें नवरात्रि व्रत?

देवताओं के गुरु बृहस्पति ने सृष्टि को बनाने वाले ब्रह्मा से पूछा कि हे ब्रह्मा! आप सभी शास्त्रों को जानने वाले हैं। आप कृपा कर बताएं कि माँ भगवती की प्रसन्नता के लिए किया जाने वाला नवरात्र व्रत क्यों किया जाता है। इस व्रत को पहले किसने किया और इस व्रत का फल क्या है? श्री ब्रह्माजी ने कहा 'हे देवगुरु! तुमने जगत् के कल्याण के लिए अच्छा प्रश्न किया है। प्रत्येक वर्ष में चार बार नवरात्र व्रत होते हैं। चैत्र, आषाढ़, आश्विन और माघ मास के शुक्ल पक्ष को इसके लिए निश्चित किया गया है। इन चार में भी प्रमुख चैत्र और आश्विन मास के नवरात्र माने गये हैं। इन नवरात्र का व्रत करने वालों की सभी कामनाएं पूर्ण होती हैं। माँ भगवती की कृपा से व्रत, पूजन और कथा श्रवण के साथ दान-पुण्य करने वाला मोक्ष का अधिकारी बनता है। नवरात्र व्रत करने वाला धन, विद्या, पुत्रादि प्राप्त करता है। इस व्रत को न करने वाला मनुष्य उत्तम धन से रहित होकर पृथ्वी पर सम्मान नहीं पाता है। यदि इस व्रत के करने वाला मनुष्य सारे दिन का उपवास न कर सके तो एक समय भोजन कर ले और उस दिन बांधवों के सहित नवरात्र व्रत की कथा श्रवण करें। हे बृहस्पते! जिसने पहले इस महाव्रत को किया, उसका पवित्र इतिहास मैं तुम्हे सुनाता हूँ। इस प्रकार ब्रह्माजी का वचन सुनकर बृहस्पति जी बोले-''कल्याण करने वाले इस व्रत के इतिहास को मैं सावधान होकर सुन रहा हूँ। कृपया सविस्तार कहें!'

ब्रह्माजी बोले-''पीठत नामक मनोहर नगर में एक सुनाथ नाम का ब्राह्मण रहता था। वह भगवती दुर्गा का भक्त था। उसके परिवार में सम्पूर्ण सद्गुणों से युक्त ब्रह्मा की उत्तम रचना रूप यथार्थ नाम वाली सुमति नाम की एक अत्यन्त सुन्दर पुत्री पैदा हुई। वह कन्या सुमति अपने पिता के घर शुक्ल पक्ष की चन्द्रकला जैसी बढ़ने लगी। उसका पिता प्रतिदिन दुर्गा की पूजा और होम करता। कन्या भी नियम से उपस्थित होती। एक दिन सुमति अपनी सखियों के साथ खेल में लग गई। भूल से भगवती के पूजन में देर से उपस्थित हुई। ब्राह्मण ने मान लिया कि बेटी की पूजा में रुचि नहीं है। वह अपना बनाव-श्रृंगार ही जरूरी समझती है। उसने क्रोध में आकर कहा-''मैं इसे अब ऐसी जगह ब्याह दूंगा, जहाँ इसका रूप-रंग व्यर्थ हो जाये।' यह सोच ब्राह्मण ने कहा-'बेटी! तू मेरा कहा नहीं सुनती है, तेरा बहुत बुरा होगा।' बेटी ने बड़ी विनम्रता से कहा-'पिताजी! माँ मेरी रक्षक है। भाग्य का लिखा मिटता नहीं।'

पिता को पुत्री की ऐसी असावधानी देख क्रोध आया और पुत्री से कहने लगा ''हे पुत्री! तूने भगवती का पूजन नहीं किया। अब मैं कुष्ठी और दरिद्री के साथ तेरा विवाह करूँगा।'' इस प्रकार कुपित पिता का वचन सुनकर सुमति को बड़ा दुःख हुआ। दुःखी पुत्री बोली-हे पिताजी! मैं आपकी कन्या हूँ। सब तरह से आपके अधीन हूँ। आपकी इच्छा, आप चाहे जहाँ विवाह कर सकते हैं। होगा वही जो मेरे भाग्य में लिखा है। मेरा तो इस पर पूर्ण विश्वास है। मनुष्य जाने कितने मनोरथो का चिंतन करता है पर होता वही है जो भाग्य में विधाता ने लिखा है।' अपनी कन्या के ऐसे निर्भयता से कहे हुए वचन सुनकर ब्राह्मण को और अधिक क्रोध आया। उसने अपनी कन्या का एक कुष्ठी के साथ विवाह कर ही दिया और बोला-''देखें भाग्य के भरोसे रहकर क्या करोगी?'' इस प्रकार पिता के कठोर व्यवहार को देख सुमति विचार करने लगी कि मुझे भाग्य से कुष्ठी पति मिल गया है। चलो कहीं और चलें। सुमति अब अपने पति के साथ वन में चली गई।

भय देने वाले वन में सुमति और उसके पति ने बड़े कष्ट में रात

बिताई। सारी रात वह दम्पती भगवती का ध्यान करते रहे। माँ बड़ी दयालु है। सुमति का दुःख देख द्रवित हो गई। गरीब बालिका की ऐसी दशा देखकर भगवती प्रकट हो गई। वे सुमति से कहने लगीं-''ब्राह्मणी! मैं तुम पर प्रसन्न हूँ। तुम जो चाहो सो वरदान मांग सकती हो। मैं प्रसन्न होने पर मनवांछित फल देने वाली हूँ।' इस प्रकार भगवती दुर्गा का वचन सुनकर सुमति कहने लगी-आप कौन हैं, जो मुझ पर प्रसन्न हुईं? कृपया मुझे बतायें और अपनी कृपा दृष्टि से मुझ दीन दासी को कृतार्थ करें।'' सुमति का वचन सुनकर देवी कहने लगी-''मैं आदि शक्ति हूँ और मैं ही ब्रह्मविद्या और सरस्वती हूँ। मैं प्रसन्न होने पर प्राणियों का दुःख दूर कर उनको सुख प्रदान करती हूँ।' सुमति माँ के चरणों में गिर गई। उसने हाथ जोड़कर पूछा-'हे माँ! किन कारणों से मेरी यह दुर्गति हुई है? इस जन्म में तो मैंने कोई पाप नहीं किया। आप कृपया मेरा पूर्व जन्म बतायें।'' भगवती ने कहा-''मैं तुम्हारे पूर्व जन्म का वृतान्त सुनाती हूँ। तू पूर्व में निषाद (भील) की स्त्री थी और पतिव्रता थी। एक दिन तेरे पति निषाद ने चोरी की। चोरी करने के कारण तुम दोनों को सिपाहियों ने पकड़ लिया और कैद कर दिया। उन लोगों ने तुझको और तेरे पति को भोजन नहीं दिया। भाग्य से वह नवरात्र का दिन था। नवरात्र में तुम्हें न तो कुछ खाने को मिला और न जल! इस प्रकार नौ दिन तक नवरात्र का व्रत हो गया। हे सुमति! उन दिनों में जो व्रत हुआ, उस व्रत के प्रभाव से प्रसन्न होकर तुम्हें उत्तम परिवार मिला था। उसी जन्म के व्रत के प्रभाव से मैंने दर्शन दिए हैं। अब तुम्हें मनवांछित वस्तु मिल रही है। तुम्हारी जो इच्छा हो, सो मांगो!''

इस प्रकार दुर्गा के वचन सुनकर सुमति बोली-''अगर आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो हे दुर्गे! कृपया मेरे पति का कोढ़ दूर कर दें।' देवी कहने लगी-'उन दिनों में जो तुमने व्रत किया। उस व्रत के मात्र एक दिन का पुण्य अपने पति का कोढ़ ठीक करने के लिए अर्पण करो। मेरे प्रभाव से तेरा पति कोढ़ से रहित हो जाएगा।'' माँ दुर्गा की महिमा अपार है। किसी भी जन्म में किया पुण्य, उसका नाम स्मरण, व्रत आदि भक्त को मनचाहा वरदान देता है। श्री ब्रह्माजी ने कहा-''देवी के वचन सुनकर सुमति बहुत प्रसन्न हुई। अपने पति को निरोग करने की इच्छा से माँ दुर्गा को प्रणाम कर बोली-'माँ तुम मुझ पर कृपा करो और अपने पूजन का फल दो, मेरे पति को निरोग कर दो।' सुमति के पति का शरीर भगवती दुर्गा की कृपा से कांतियुक्त हो गया। पति की मनोहर देह को देखकर सुमति माँ की स्तुति करने लगी। उसने कहा-''हे दुर्गे! आप दुर्गति को दूर करने वाली, तीनों जगत् का सन्ताप हरने वाली, समस्त दुःखों को दूर करने वाली, रोगी मनुष्य को निरोग करने वाली, प्रसन्न होने पर मनवांछित वस्तु देने वाली और दुष्ट मनुष्यों को नाश करने वाली हो। सारे जगत् की तुम ही माता और तुम ही पिता हो। हे अम्बे! मेरे छोटे से अपराध पर मेरे पिता ने एक कुष्ठी के साथ मेरा विवाह किया था। आपने मेरा उद्धार किया है। हे देवि! मैं आपको प्रणाम करती हूँ। मुझ दीन की रक्षा करो।'' इस प्रकार वन्दना कर सुमति माँ के चरणों में गिर पड़ी। ब्रह्मा जी बोले -''बृहस्पति! सुमति ने मन से देवी की स्तुति की थी। देवी बहुत संतुष्ट हुई। वह ब्राह्मणी से बोली-हे ब्राह्मणी! तेरे उद्दालक नाम का अति बुद्धिमान, धनवान, कीर्तिमान और जितेन्द्रिय पुत्र होगा।'' ऐसे कहकर देवी उस ब्राह्मणी से फिर कहने लगी-'हे ब्राह्मणी! और भी कुछ तेरी इच्छा हो तो मांग सकती है।' भगवती दुर्गा के वचन सुनकर सुमति बोली-'हे दुर्गे! अगर आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो कृपा कर मुझे नवरात्र व्रत विधि बतलाइये। हे दयावती! जिस विधि से नवरात्र व्रत करने से आप प्रसन्न होती हैं उस विधि को और उसके फल का विस्तार से वर्णन करें।

ब्राह्मणी के वचन सुनकर दुर्गा कहने लगी-''हे ब्राह्मणी! मैं तुम्हारे लिए सम्पूर्ण पापों को दूर करने वाली नवरात्र विधि को बताती हूँ, जिससे मनुष्य पापों से छूट मोक्ष की प्राप्ति करता है। आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से लेकर नौ दिन तक विधि-पूर्वक व्रत करें। यदि दिन भर व्रत न कर सकें तो एक समय भोजन करें। योग्य ब्राह्मण से पूछ कर घट स्थापना करें और वाटिका बनाकर उसको प्रतिदिन जल से सींचें। महाकाली, महालक्ष्मी और महासरस्वती इनकी मूर्तियाँ बनाकर नित्य विधि सहित पूजा करें। विधि पूर्वक अर्घ्य दें। बिजौरा के फूल से अर्घ्य देने से रूप की प्राप्ति होती है और जायफल से कीर्ति और दाख से कार्य की सिद्धि होती है। आंवले से सुख और केले से आभूषण की प्राप्ति होती है। इस प्रकार फलों से अर्घ्य देकर यथाविधि हवन करें। खांड, घी, गेंहू, शहद, जौ, तिल, बिल्वपत्र, नारियल, दाख और कदंब से हवन करें। गेंहू से होम करने से लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। खीर से परिवार वृद्धि चम्पा के पुष्पों से धन और सुख की प्राप्ति होती है। आँवले से ही कीर्ति और केले से पुत्र प्राप्ति होती है। कमल से राजसम्मान और दाखों से सुख और सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। खांड, घी, नारियल, शहद, जौ और तिल इनसे तथा फलों से होम करने से मनवांछित वस्तु की प्राप्ति होती है। व्रत करने वाला मनुष्य इस विधान से होम कर आचार्य को अत्यन्त नम्रता के साथ प्रणाम करे और यज्ञ की सिद्धि के लिए उसे दक्षिणा दें। इस महाव्रत को पहले बताई हुई विधि के अनुसार जो कोई करता है उसके सब मनोरथ सिद्ध हो जाते हैं। इसमें तनिक भी संशय नहीं है। इन नौ दिनों में जो कुछ दान दिया जाता है, उसका करोड़ो गुना फल मिलता है। नवरात्र के व्रत करने से अश्वमेध यज्ञ का फल मिलता है।

नवरात्र में भगवती के पूजन हवन की यह विधि जान ब्राह्मणी प्रसन्न हो गई। सम्पूर्ण कामनाओं को पूर्ण करने वाले इस उत्तम व्रत को तीर्थ देवी मन्दिर अथवा सुविधा हो तो घर में ही विधि के अनुसार करें। कवच, कीलक, अर्गलास्तोत्र का पाठ, हवन, पुराण पाठ के साथ, भगवती का पूजन करना चाहिए। नवरात्र व्रत की विधि और फल बताकर देवी अर्न्तध्यान हो गई। जो पुरुष या स्त्री इस व्रत को भक्तिपूर्वक करता है वह इस लोक में सुख पाकर अन्त में मोक्ष को प्राप्त होता है।

♦♦♦

कल्याणी रक्षा कवच

प्राचीन काल में मारण, वि)षण, षटकर्म प्रयोग आदि तांत्रिककर्म एवं मंत्र गुप्त रखे जाते थे, गुरु योग्य शिष्यों को ही इनका ज्ञान देते थे, लेकिन आज नौसिखिये व्यक्ति इन का दुरुपयोग करने लगे हैं, ये कवच जहॉ एक ओर आप पर किये गये तांत्रिक प्रयोगों से रक्षा करेगा वही भविष्य में होने वाले किसी भी प्रकार की तंत्र बाधा से आपकी रक्षा करेगा! अपनी और अपनों की सुरक्षा आपके हाथ.....

न्यौछावर राशि 3000/- रु.